लेखक परिचय

हरिवंश राय बच्चन हिन्दी क वता के उत्तर छायावत काल के प्रमुख क वयों में से एक हैं। उनकी सबसे प्र सद्ध कृति मधुशाला है। भारतीय फल्म उद्योग के प्रख्यात अ भनेता अ मताभ बच्चन उनके सुपुत्र हैं।
उन्होंने इलाहाबाद वश्व वद्यालय में अंग्रेजी का अध्यापन कया। बाद में भारत सरकार के वदेश मंत्रालय में हिन्दी वशेषज्ञ रहे। अनन्तर राज्य सभा के मनोनीत सदस्य रहे। बच्चन जी की गनती हिन्दी के सर्वा धक लोक प्रय क वयों में होती है।
हरिवंश राय बच्चन जी का जन्म 27 नवम्बर 1907 को इलाहाबाद में एक कायस्थ परिवार मे हुआ था। इनके पता का नाम प्रताप नारायण श्रीवास्तव तथा माता का नाम सरस्वती देवी था। इनको बाल्यकाल में 'बच्चन' कहा जाता था जिसका शाब्दिक अर्थ 'बच्चा' या 'संतान' होता है। बाद में ये इसी नाम से मशहूर हुए। उन्होंने कायस्थ पाठशाला में पहले उर्दू और फर हिंदी की शक्षा प्राप्त की। उन्होंने इलाहाबाद वश्व वद्यालय से अंग्रेजी में एम॰ए॰ और कैम्ब्रिज वश्व वद्यालय से अंग्रेजी साहित्य के वख्यात क व डब्लू॰बी॰ यीट्स की क वताओं पर शोध कर PH.D(पीएच.डी.) पूरी की थी । १९२६ में १९ वर्ष की उम्र में उनका ववाह श्यामा बच्चन से हुआ जो उस समय १४ वर्ष की थीं। ले कन १९३६ में श्यामा की टीबी के कारण मृत्यु हो गई। पाँच साल बाद १९४१ में बच्चन ने एक पंजाबन तेजी सूरी से ववाह कया जो रंगमंच तथा गायन से जुड़ी हुई थीं। इसी समय उन्होंने 'नीड़ का निर्माण फर' जैसे क वताओं की रचना की।
2002 के सर्दियों के महीने से उनका स्वस्थ्य बिगड़ने लगी। 2003 के जनवरी से उनको सांस लेने में दिक्कत होने लगी।कठिनाइयां बढ़ने के कारण उनकी मृत्यु 18 जनवरी 2003 में सांस की बीमारी के वजह से मुंबई में हो गयी।

प्रमुख कृतियाँ-
क वता संग्रह- मधुशाला, मधुबाला, मधुकलश, निशा निमंत्रण, आत्म परिचय आदि।
आत्मकथा- क्या भूलूँ क्या याद करूँ, नीड़ का निर्माण फर, बसेरे से दूर, दशद्वार से सोपान तक।

पुरस्कार/सम्मान- उनकी कृति दो चट्टानें को १९६८ में हिन्दी क वता के साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित कया गया था। इसी वर्ष उन्हें सो वयत लैंड नेहरू पुरस्कार तथा एफ्रो ए शयाई सम्मेलन के कमल पुरस्कार से भी सम्मानित कया गया। बिड़ला फाउण्डेशन ने उनकी आत्मकथा के लए उन्हें सरस्वती सम्मान दिया था। बच्चन को भारत सरकार द्वारा १९७६ में साहित्य एवं शक्षा के क्षेत्र में पद्म भूषण से सम्मानित कया गया था।

सारांश

जो बीत गई सो बात गई!
जीवन में एक सतारा था।
माना वह बेहद बेहद प्यारा था,
वह डूब गया तो डूब गया,
अंबर के आनन को देखो,
कतनी इसके तारे टूटे
कतने इसके प्यारे छूटे
जो छूट गए फ़र कहां मले,
बोलो टूटे तारों पर
कब अंबर शोक मनाता है!
जो बीत गई सो बात गई!

उ: प्रस्तुत पंक्तियां श्री हरिवंश राय बच्चन जी अपनी पहली पत्नी श्यामा के अकाल मृत्यु के कारण शोकानुकूल हृदय को सांत्वना देने एवं आगे बढ़ने की प्रेरणा से रचते हैं।
क व का कहना है क जीवन और मृत्यु संसार का शाश्वत सत्य है। जीवन नश्वर है। जीवन के पश्चात मृत्यु का आना वधाता का वधान है और इस मृत्यु पर शोक व्य थत कर समय नष्ट करने से कोई फायदा नहीं, बल्कि आगे बढ़कर अपने कार्य को निपुणता से करना ही सच्चे दायित्ववान मनुष्य की पहचान है। क व इस संपूर्ण दर्शन को अंबर और उसके टूटे तारों के माध्यम से समझाते हैं। वे अंबर के मुंह को देखने के लए आग्रह करते हुए कहते हैं क अंबर से कतने तारे टूटकर गर जाते हैं, वे सारे तारे उसके लए कतने प्यारे होते हैं पर उस छूटे हुए तारों पर आसमान कभी शोक नहीं

मनाता। उसी प्रकार मनुष्य को भी जीवन और मृत्यु के शाश्वत सत्य को स्वीकार कर स्वयं के जीवन को संवारने के लए प्रचेष्ठित होना चाहिए।

जीवन में था एक कुसुम
थे उसपर नित्य निछावर तुम,
वह सूख गया तो सूख गया,
मधुबन की छाती को देखो,
सूखी कतनी इसकी क लयां,
मुरझाई कतनी वल्लरियां,
जो मुरझाई फर कहां खली,
पर बोलो सूखे फूलों पर,
कब मधुबन शोर मचाता है!
जो बीत गई सो बात गई!

उ: प्रस्तुत पंक्तियों में जीवन की नश्वरता को क व ने उपवन के माध्यम से दर्शाया है। क व का मानना है क संपूर्ण संसार नश्वर है, संसार में अवस्थित प्रत्येक पदार्थ भी नश्वरता के चक्रव्यूह में फंसा है। जब प्रकृति स्वयं नश्वर है तो उसमें र चत मनुष्य भी अस्थिर एवं मरणशील है। जिस प्रकार प्रकृति अपनी नश्वरता एवं अपने तत्व की नश्वरता पर उदासीनता को ग्रहण नहीं करती बल्कि संसार की इस नियति को अनायास स्वीकार कर पुनः पृथ्वी की संरचना में जुट जाती है, उसी प्रकार स्वयं मनुष्य को भी प्रयजनों की मृत्यु में अ धक निराशा में न बंधते हुए जीवन को सहज स्वीकार कर अग्रसर होना चाहिए। इसी संदर्भ में क व बच्चन जी उपवन का उदाहरण देते हुए कहते हैं क मधुबन की शोभा उसकी क लयों एवं लताओं से है परंतु जीवन चक्र के इस रीत में उलझती उपवन की प्यारी क लयां, लताएं मुरझाकर झड़ जाते हैं, मधुबन कभी भी उस मुरझाए हुए शो भत क लयों एवं लताओं पर शोर नहीं मचाता। ऋतु के परिवर्तन के कारण उपवन में क लयों एवं वल्लरियों का मुरझाना एवं नवीनतम से उत्पन्न होना एक शाश्वत सत्य है। मधुबन इस परम सत्य को समझकर अपनी आकर्षण को भूलकर नवीन फूलों के लए आकु लत रहता है। उसी प्रकार प्रत्येक मनुष्य के जीवन में पुष्प की भांति कोमलकांत, सुगं धत तथा सुंदर प्रय के अकाल बुझ जाने से हमें अपने ह्रदय को मजबूत कर जीवन की ओर आगे बढ़ते रहना चाहिए।

जीवन में मधु का प्याला था,
तुमने तन- मन दे डाला था,
वह टूट गया तो टूट गया,
मदिरालय का आंगन देखो,
कतने प्यारे हिल जाते हैं,
गर मट्टी में मल जाते हैं,
जो गरते हैं कब उठते हैं,
पर बोलो टूटे प्यालो पर;
कब मदिरालय पछताता है!
जो बीत गई सो बात गई!

उ: प्रस्तुत पंक्ति उत्तर छायावाद क व हरिवंश राय बच्चन द्वारा र चत एक दार्शनिक पद है। जिसमें वे संसार की नश्वरता को मदिरालय के माध्यम से दर्शाते हैं।
क व का मानना है क यह वराट संसार मदिरालय एवं उसके टूटे प्यालों जैसी है, संसार में वराजमान प्रत्येक पदार्थ नश्वरता का उद्घोषक करता है। प्रत्येक मनुष्य का जीवन भी नश्वरता का पहचान है। जिसका जन्म होता है उसका मरण निश्चित है। इसी दर्शन को समझाने के लए क ववर बच्चन भी मदिरालय का उदाहरण देते हैं, उनकी मान्यता है क जिस प्रकार मदिरालय के प्याले टूटकर मट्टी में मल जाते है, उसका अस्तित्व मट्टी में समाकर एकाकार हो जाता है परंतु मदिरालय कभी उस टूटे प्यालों पर रोता नहीं है, पछताता नहीं है, शौक नहीं मनाता। उसी प्रकार मनुष्य के जीवन में भी कोई प्रय, बहुत प्रय मधु का प्याला होता है उसके बुझ जाने से मनुष्य को भी अवसाद में लीन न होते हुए अपने जीवन की गति को बरकरार रखनी चाहिए।

मृदु मट्टी के हैं बने हुए
मधुघट फूटा ही करते हैं,
लघु जीवन लेकर आए हैं,
प्याले टूटा ही करते हैं
फर भी मदिरालय के अंदर
मधु के घट हैं, मधु प्याले हैं,
जो मादकता के मारे हैं,

वे मधु लूटा ही करते हैं;
वह कच्चा पीनेवाला है
जिसकी ममता घट- प्यालों पर,
जो सच्चे मधु से जला हूआ
कब रोता है, चल्लाता है।
जो बीत गई सो बात गई!

उ: प्रस्तुत पंक्तियों में क ववर हरिवंश राय बच्चन शरीर को मट्टी की भांति बताया है। जिसका टूटना और नष्ट होना स्वभा वक है।
प्रस्तुत अंश में बच्चन जी ने शाश्वत सत्य को उद्घाटित करते हुए कहते हैं क यह जीवन नश्वर है, अस्थाई है। एक न एक दिन वह नष्ट हो जाते हैं। जिस प्रकार कोमल मट्टी के बने हूए मधु घट फूटा जाते हैं, यह घट छोटे जीवन लेकर पृथ्वी पर आगमन होते हैं, अपना समय एवं कार्य पूर्ण कर इस पृथ्वी में वलीन हो जाते हैं। उसी प्रकार हमारे शरीर में वराजमान हमारा जीवन भी निर्धारित समय के पश्चात मट्टी में वलीन हो जाते हैं। अस लयत में मनुष्य शरीर से नहीं प्रेम से जीता है। शरीर तो कच्चे एवं कोमल प्याला जैसा है जो टूटकर बिखरा ही जाते हैं। जो ह्रदय से संयम रहकर घोर वपदा में भी हिम्मत न हारकर स्वभा वक जीता है वही सच्चा प्रेमी एवं ज्ञानी महत्व है। मदिरालय में भी प्याले टूटते हैं फर भी उसके अंदर मधु के घट पूर्णरूपेण स्थित रहते हैं। जिजी वषा से लतपथ लोग उस मधु का आनंद लया करते हैं। जो लोग मधु के प्यालों के टूटने पर उदासीनता को ग्रहण करते हैं वह सच्चा पीने वाला नहीं है, जो सचमुच मधु से प्रेम करते हैं वह प्याले के टूटने पर रोता या चल्लाता नहीं है बल्कि मधु का आनंद लेते रहते हैं। उसी प्रकार जीवन जीने की सच्ची इच्छा रखने वाला व्यक्ति अपने प्रयतम की मृत्यु पर शोकाकुल न होकर जीवन की गति को बनाए रखने, नए सरे से जीवन जीने का प्रयास करते हैं।

<u>शब्दार्थ</u>

१) आनंद- मुख।
२) वल्लरियाँ - लताएं।
३) मधुबन- उपवन।
४) मदिरालय- मधुशाला।
५) मादकता- नशा।

<u>लघु प्रश्नोंत्तर</u>

प्र: १) 'जो बीत गई सो बात गई' क वता कसकी रचना है?
उ: 'जो बीत गई सो बात गई' क वता हरिवंश राय बच्चन जी की रचना है।

२) 'जो बीत गई सो बात गई' प्रस्तुत पंक्ति का आशय क्या है?
उ: प्रस्तुत पंक्ति का आशय है क जीवन में कोई बहुत प्रय व्यक्ति रहता है परंतु उसके अकाल मृत्यु के पश्चात हमें अवसाद से मुक्त होकर जीवन के चक्र को गति प्रदान करनी चाहिए। जीवन का चक्र सदैव चलता रहता है, उससे वमुख होना अज्ञानता का परिचय है। इस लए सच्चे प्रेमी के रूप में जीवन की कला को समझकर जीवन के चक्र में अग्रसर होना चाहिए।

प्र: मदिरालय कसका सूचक है?
उ: मदिरालय संसार का सूचक है।

Teacher's Name - Riya Saha